

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 11 जून, 2021

मुख्यमंत्री कृषि मंत्रि ऊर्जा योजना

हाल ही में राजस्थान सरकार ने 'मुख्यमंत्री कृषि मंत्रि ऊर्जा योजना' के मसौदे को मंजूरी दी है, जिसके तहत कृषि बजिली उपभोक्ताओं को प्रतिमाह 1,000 रुपए प्रदान किये जाएंगे। इस योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा मीटर उपभोक्ताओं को बजिली बिलों पर प्रतिमाह 1,000 रुपए और अधिकतम 12,000 रुपए प्रतिवर्ष प्रदान किये जाएंगे। इस संबंध में जारी अधिकारिक बयान के मुताबिक, इस योजना के कारण राज्य सरकार पर प्रतिवर्ष 1,450 करोड़ रुपए का वित्तीय बोझ आएगा। इसके तहत बजिली वितरण कंपनियों द्वारा द्वैमासिक आधार पर बजिली बिल जारी किये जाएंगे। वदिति हो कि केंद्र और राज्य सरकार के कर्मचारी तथा अन्य आयकर दाता इस योजना के तहत सब्सिडी के लिये पात्र नहीं होंगे। पात्र उपभोक्ताओं को योजना के साथ अपना आधार नंबर और बैंक खाता लकिकराना होगा। योजना के तहत अनुदान राशि तभी देय होगी जब उपभोक्ताओं द्वारा अपनी सभी बकाया राशि का भुगतान किये जाएगा। बकाया राशि का भुगतान करने के बाद उपभोक्ताओं को आगामी बजिली बिल पर सब्सिडी राशि देय होगी। इस योजना की घोषणा राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा वर्ष 2021-22 के बजट में की गई थी।

वदिशी प्रतबिंधों का मुकाबला करने हेतु चीन का कानून

चीन ने वदिशी प्रतबिंधों का मुकाबला करने के लिये हाल ही में एक नया कानून पारित किये है, जिसका उद्देश्य व्यापार और मानवाधिकारों पर अमेरिका तथा यूरोपीय संघ के बढ़ते दबाव के वरिद्ध अपना बचाव करना है। चीन ने संयुक्त राज्य अमेरिका पर चीन की कंपनियों को 'दबाने' का आरोप लगाया है। चीन द्वारा पारित इस कानून में वीजा जारी करने से इनकार करने, प्रवेश पर प्रतबिंध लगाने, नरिवासन और उन व्यक्तियों या व्यवसायों की संपत्ति को ज़ब्त करने, जो चीन के व्यवसायों या अधिकारियों के खलिाफ वदिशी प्रतबिंधों लागू करते हैं या ऐसा करने में मदद करते हैं, जैसे प्रावधान शामिल हैं। बीते कई दनिों से अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा हॉनगकॉन्ग और शनिजियांग जैसे कषेत्रों में मानवाधिकारों के उल्लंघन और बौद्धिक संपदा की चोरी को लेकर चीन की आलोचना की जा रही है। बीते सप्ताह 'व्हाइट हाउस' ने उन कंपनियों की ब्लैकलिस्ट का वसितार किये था, जनि पर चीन की सेना के साथ संबंध के कारण अमेरिकियों द्वारा नविश किये जाने पर प्रतबिंध लगा दिये गए थे।

बुद्धदेव दासगुप्ता

राष्ट्रपति रामनाथ कोवदि ने प्रख्यात बंगाली फलिम नरिमाता बुद्धदेव दासगुप्ता (77 वर्ष) के नधिन पर दुख व्यक्त करते हुए कहा कि बुद्धदेव दासगुप्ता ने अपनी वशिष प्रसदिध फलिमों और कवतिाओं से हमारी कला तथा संस्कृति को समृद्ध किये है। गौतम घोष और अपरणा सेन के साथ बुद्धदेव दासगुप्ता को 1980 और 1990 के दशक में बंगाल में समानांतर सनिमा आंदोलन के ध्वजवाहक के रूप में जाना जाता है। दूरत्व (1978), गृहजुद्धा (1982) और अंधी गली (1984) जैसी उनकी प्रारंभिक फलिम बंगाल में नकसली आंदोलन और बंगाली लोगों की सामूहिक चेतना पर उसके प्रभाव पर केंद्रित थीं। बुद्धदेव दासगुप्ता ने अपने करियर में पाँच बार सर्वश्रेष्ठ फीचर फलिम के लिये राष्ट्रीय फलिम पुरस्कार जीता था, जसिमें बाग बहादुर (1989), चरचर (1993), लाल दर्जा (1997), मॉडो मेयर उपाख्यान (2002) और कालपुरुष (2008) शामिल हैं, जबकि उनकी फलिम दूरत्व (1978) और तहदार कथा (1993) ने बांगला में सर्वश्रेष्ठ फीचर फलिम का राष्ट्रीय फलिम पुरस्कार जीता था। उन्हें उनकी फलिमों उत्तरा (2000) और स्वप्नेर दनि (2005) के लिये सर्वश्रेष्ठ नरिदेशक के पुरस्कार से भी सम्मानित किये गए थे। वे एक महत्त्वपूर्ण कवि भी थे, जनिहोंने कई कवति संग्रहों का प्रकाशन किये। इसके अलावा उन्हें वर्ष 2008 में मैडरडि में आयोजित 'स्पेन इंटरनेशनल फलिम फेस्टिवल' में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किये गए थे।

चक्रवात डटिकशन तकनीक

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) खड़गपुर के शोधकर्त्ताओं ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जो अंतरिक्ष में मौजूद उपग्रहों से पूर्व ही हदि महासागर के ऊपर उष्णकटबिंधीय चक्रवातों का पता लगाने में मददगार साबित हो सकती है। इस तकनीक के माध्यम से स्थानीय प्रशासन को चक्रवात का पता लगाने और उसके प्रभाव के बीच एक बड़ा समय अंतराल मलि सकेगा, जसिसे चक्रवात प्रबंधन संबंधी गतिविधियों में मदद मलिगी। खड़गपुर के शोधकर्त्ताओं द्वारा इस तकनीक के तहत वायुमंडलीय कॉलम में पूर्व-चक्रवाती गतिविधियों के प्रारंभिक साक्ष्यों की पहचान की जाती है और इसके स्थानिक-अस्थायी विकास को ट्रैक किये जाता है। इस तकनीक के तहत अध्ययन भारत सरकार के वजिज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के सहयोग से 'जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम' के तहत आयोजित किये गए हैं। इसके तहत शोधकर्त्ताओं ने मानसून के पश्चात् उत्तरी हदि महासागर के ऊपर विकसित चार गंभीर चक्रवातों - फैलनि, वरदा, गाजा, माडी और मानसून से पूर्व के दोचक्रवातों- मोरा और आइला का अध्ययन किये।

